॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

# आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

वर्ष : 17 अंक : 20 25 अक्टूबर 2017 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : JaipurCity/250/2015-17 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

## मायावती द्वारा हिन्दू धर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म अपनाने की घोषणा

# मायावती जी! जातिवाद समाप्त करने के लिए आप आर्य समाजी क्यों नहीं बन जाती

**जयपुर 25.10.2017।** उत्तरप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने 24 अक्टूबर को घोषणा की है कि वे देश में अनेक स्थानों पर दलितों पर होने वाले अत्याचारों के विरोध में हिन्दू धर्म को छोड़कर अपने करोड़ों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म में शामिल हो जायेगी। आजादी के सत्तर वर्ष बाद भी हमारा देश जातिवाद से पीड़ित है और अनेक गाँवों, कस्बों और शहरों में दलितों पर अत्याचार हो रहे हैं। गुजरात में मरे हुए पशुओं का धंधा करने वाले, उनसे जूते आदि तैयार करने वाली जातियों पर सवर्णों ने हमले किये। विश्वविद्यालयों में अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के शिक्षित नवयुवक हिन्दू धर्म के विरूद्ध हो गये और वे संगठित होकर विश्वविद्यालयों के चुनावों में विजयी भी हो रहे है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम जातिवाद पर हमला बोला था। महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम घोषणा की थी कि कोई व्यक्ति गुण, कर्म और स्वभाव से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय, शुद्र बनता है ना कि जन्म से।

मायावती जी! आप बहुत बड़ी राजनीतिक है। आप दो बार मुख्यमंत्री रह चुकी है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है *कि आप को आधुनिक* भारत के इतिहास का भी ज्ञान नहीं है। महर्षि दयानन्द ने हरिद्वार के कुंभ के मेले में पांखड खंडनी पताका फहराई थी और वहां पर घोषणा की थी कि तुम यजुर्वेद के 31वें अध्याय के 11वें मंत्र की जो व्याख्या करते हो वह गलत है। तुम कहते हो ब्राह्मण ईश्वर के मुख से पैदा हुआ है और क्षत्रिय बाहू से, वैश्य ऊरू से और शूद्र पगों से उत्पन्न हुआ है।

**ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।**
**ऊरू तदस्य यद्वैष्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।**

इसलिए इसका यह अर्थ है कि जो पूर्ण व्यापक परमात्मा की सृष्टि में मुख के सदृश सब में मुख्य उत्तम हो, वह (ब्राह्मणः) ब्राह्मण, (बाहू) 'बाहुर्वै बलं बाहुर्वै वीर्यम्' (शतपथ ब्राह्मण), बल वीर्य का नाम बाहु है, वह जिसमें अधिक हो, सो (राजन्यः) क्षत्रिय, (ऊरू) कटि के अधो और जानु के उपरिस्थ भाग का नाम है। जो सब पदार्थों और सब देशों में ऊरू के बल से जावे, आवे, प्रवेश करे, वह (वैश्यः) वैश्य और (पद्भ्याम्) जो पग के अर्थात् नीचे अंग के सदृश मूर्खत्वादि गुण वाला हो, वह शूद्र है।

महर्षि ने मनुस्मृति भगवत गीता अपदस्तभसूत्र के अनेक उदाहरण देकर यह सिद्ध किया कि वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार थी न कि जन्म से। अभी तक हिन्दू धर्म जन्म से ही जाति मानता था। इसी प्रकार खानपान में छुआछूत का जबर्दस्त विरोध किया। और यह प्रतिपादित किया कि वैदिक काल में शूद्र ही भोजन बनाया करते थे परन्तु आज यह कार्य

ब्राह्मण करने लगे है। स्वामी जी से प्रश्न किया गया कि शूद्र के छुए हुए पके अन्न के खाने में दोष लगाते हैं तो उस के हाथ का बनाया हुआ कैसे खा सकते है? महर्षि ने उत्तर दिया 'यह बात कपोल कल्पित झूठी है क्योंकि जिन्होंने गुड़, चीनी, घृत, दूध, पिशान, शाक, फल, मूल, खाया उन्होंने जानो सब जगत् भर के हाथ का बनाया और उच्छिष्ट खा लिया क्योंकि जब शूद्र, चमार, भंगी, मुसलमान, ईसाई आदि लोग खेतों में से ईख को काटते, छीलते, पील कर रस निकालते हैं तब मल मूत्रोत्सर्ग करके उन्हीं बिना धोये हाथों से छूते, उठाते, धरते आधा सांठा चूंस रस पी के आधा उसी में डाल देते और रस पकाते समय उस रस में रोटी भी पका कर खाते हैं। जब चीनी बनाते हैं तब पुराने जूते कि जिसके तले में विष्ठा, मूत्र, गोबर, धूली लगी रहती है उन्ही जूतों से उस को रगड़ते हैं। दूध में अपने घर के उच्छिष्ट पात्रों का जल डालते, उसी में घृतादि रखते और आटा पीसने समय भी वैसे ही उच्छिष्ट हाथों से उठाते और पसीना भी आटा में टपकता जाता है इत्यादि। और फल मूल कंद में भी ऐसी ही लीला होती है। जब इन पदार्थों को खाया तो जानो सब के हाथ का खा लिया है।'

इसके बाद महर्षि दयानन्द के परम शिष्य स्वामी श्रद्धानंन्द ने अस्पृश्यता निवारण के लिए अपना सारा जीवन न्योछावर कर दिया। 1919 में अखिल भारतीय कांग्रेस के अमृतसर में आयोजित अधिवेशन को स्वागताध्यक्ष के रूप में सम्बोधित करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा 'लण्डन नगर में भारत की रिफार्म-स्कीम-कमेटी के सामने ईसाई-मुक्ति-फौज के वूथ टकर साहब ने कहा था कि भारत के साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार मिलने चाहिये और उसके लिये हेतु दिया था- 'क्योंकि वे भारत में वृटिष गवर्नमेंट रूपी जहाज के लंगर हैं।' इन शब्दों पर गहरा विचार कीजिये और सोचिये कि किस प्रकार आपके जिगर के टुकड़े, जिन्हें आपने काट कर फेंक दिया है, किस प्रकार भारत माता के साढ़े छः करोड़ पुत्र एक विदेशी गवर्नमेंट रूपी जहाज के लंगर बन सकते हैं। मैं आप सब बहिनों और भाईयों से एक याचना करूंगा। इस पवित्र जातीय मन्दिर में बैठे हुए अपने हृदयों को मातृभूमि के प्रेमजल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो कि-'आज से वे साढ़े छः करोड़ हमारे लिये अछूत नहीं रहे बल्कि हमारे बहिन और भाई हैं। उनकी पुत्रियाँ और उनके पुत्र हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे। उनके गृहस्थ नर-नारी हमारी सभाओं में सम्मिलित होंगे। हमारे स्वतंत्रता प्राप्ति के युद्ध में वे हमारे कन्धे से कन्धा जोड़ेंगे और हम सब एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए ही अपने जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे।' हे देवियो और सज्जन पुरूषों! मुझे आशीर्वाद दो कि परमेश्वर की कृपा से मेरा यह स्वप्न पूरा हो।'

महात्मा गांधी ने यंग इंडिया में इस ऐतिहासिक भाषण में लिखा था- 'स्वागत समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी का भाषण उच्चता, पवित्रता, गंभीरता और सच्चाई का नमूना था। वक्ता के व्यक्तित्व की छाप उसमें आदि से

अंत तक लगी हुई थी।' दलितोद्धार के लिए कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने एक उप समिति का गठन किया जिसका अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द को बनाया गया परन्तु वर्किंग कमेटी निष्ठापूर्वक दलित उद्धार का कार्य नहीं चाहती थी। अत: इस निमित्त बनाई गई कमेटी की कार्यवाही में हेरफेर और परिवर्तन का षड़यंत्र किया गया।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की इस मनोवृत्ति पर स्वामी जी ने कांग्रेस के प्रधानमंत्री को लिखा था- 'देहली के आसपास दलितोद्धार की समस्या बहुत विकट हो रही है। मैं उसमें पूरी तरह जुटा हुआ हूँ। वर्किंग कमेटी की आनाकानी के कारण दलितोद्धार समिति कुछ भी काम नहीं कर सकती। और वर्किंग कमेटी को देश की अन्य राजनैतिक समस्याओं से इतनी फुरसत नहीं है कि दलितोद्धार कार्य की ओर ध्यान दे सके। इन अवस्थाओं में उप समिति में मेरा रहना व्यर्थ है और मैं उससे अलग होता हूँ। पं मोती लाल नेहरू ने त्याग पत्र वापस लेने का आग्रह किया और उसी दिन स्वामी श्रद्धानंन्द ने श्री मोती लाल नेहरू को पत्र लिखा - 'मैंने अमृतसर और मियाँवाली की जेलों में यह अनुभव किया है कि चरित्र गठन और अस्पृश्यता निवारण द्वारा स्थापित हुये राष्ट्रीय ऐक्य के बिना कांगेस और उस तरह की राजनैतिक संस्थाऐं कुछ भी नहीं कर सकेंगी। मैं अपनी सर्वशक्ति इस कार्य में ही लगाना चाहता हूँ इसलिए आप मेरा त्याग पत्र स्वीकार करें।

## आर्य समाज और अम्बेडकर

अम्बेडकर दलितों के हृदय सम्राट हैं और वहीं उनके धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक पथप्रदर्शक हैं। अम्बेडकर के अनुयायियों को यह मालूम नहीं कि उनके व्यक्तित्व निर्माण में आर्य समाज का कितना योगदान रहा है और अम्बेडकर आर्य समाज की जाति विरोधी विचारधारा के कारण उसके प्रशंसक थे। डॉ. अम्बेडकर ने नमस्ते का अभिवादन आर्य समाज से लिया। डॉ. अम्बेडकर की उच्च शिक्षा में श्री सयाजीराव गायकवाड और राजर्षि शाहू महाराज का सर्वाधिक योगदान रहा है और ये दोनों ही आर्य समाजी थे। डॉ. अम्बेडकर का वैदिक संस्कारों की ओर झुकाव था। डॉ. अम्बेडकर के बहिष्कृत भारत नामक साप्ताहिक मराठी समाचार पत्र के 12 अप्रेल 1929 के अंक में पृष्ठ 7 पर यह संक्षिप्त समाचार प्रकाशित हुआ था- 'समाज समता संघ का नया उपक्रम'। महार समाज में वैदिक विवाह पद्धति सुदृढ़ की जाएगी- स्मरण रहे इसी महार कुल में डॉ. अम्बेडकर का जन्म हुआ था।

उपरोक्त चर्चित अंक के ही पृष्ठ 8 पर एक सम्पन्न वैदिक विवाह संस्कार की चर्चा करते हुए यह स्पष्ट किया गया था कि 'यह विवाह हिन्दू मिशनरी सोसायटी के संस्थापक श्री गजानन्द भास्कर वैद्य की संकलित वैदिक पद्धति से सम्पन्न किया गया। उक्त समाचार के अंत में यह शुभकामना की गई है कि अस्पृश्य समाज वैदिक पद्धति का प्रचलन कर उन पर लगाए गए अस्पृश्यता के कलंक को नष्ट करने में समर्थ है।' दलित समाज में वैदिक पद्धति से सम्पन्न यह पहला विवाह था।

डॉ. अम्बेडकर की 6 सितम्बर 1929 के बहिष्कृत भारत में यह समाचार भी प्रकाशित हुआ था कि मनमाड के महारों ने श्रावणी मनाई, 26 व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किए। यह समारोह मनमाड रेलवे स्टेशन के पास डॉ. अम्बेडकर जी के मित्र श्री रामचन्द्र राणोजी पंवार नांदगांवकर के घर में सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज की जाति विरोधी विचारधारा के कारण डॉ. अम्बेडकर, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, मास्टर आत्माराम अमृतसरी के बहुत प्रशंसक थे।

### स्वामी श्रद्धानन्द और डॉ. अम्बेडकर

जातिनिर्मूलन और दलितोद्धार के सन्दर्भ में आर्य समाज के प्रमाणिकतापूर्ण ठोस-क्रियाकलापों से डॉ. अम्बेडकर अत्यन्त ही प्रभावित थे। स्वामी दयानन्द के अनुयायी गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द (1856-1926) के सन्दर्भ में वे अपनी रचना 'व्हॉट कांग्रेस एण्ड गाँधी हैव डन टू दि अन्टचेबल्स' में लिखते हैं कि 'स्वामी श्रद्धानन्द दलितों के सर्वश्रेष्ठ सहायक और समर्थक थे।' अस्पृश्यता निवारण से सम्बन्धित (कांग्रेस की) समिति में रहकर यदि उन्हें स्थिरता से काम करने का अवसर मिल पाता तो नि:संदेह एक बहुत बड़ी योजना आज हमारे सामने विद्यमान होती।

### लाला लाजपत राय और डॉ. अम्बेडकर

डॉ. अम्बेडकर, लाला लाजपत राय के बहुत बड़े प्रशंसक थे और लाला लाजपत राय के अतिरिक्त किसी भी महान पुरुष की मृत्यु पर डॉ. अम्बेडकर द्वारा कोई शोक सभा आयोजित नहीं की गई।

लाला लाजपत राय जी (1865-1928) की मृत्यु का समाचार सुनकर डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर अत्यन्त ही व्यथित हो गये। (स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को छोड़कर अन्य) किसी भी राष्ट्रीय नेता की मृत्यु से पूर्व और पश्चात् वे इतने व्यथित नहीं हुए थे। उसी रात उन्होंने 'बहिष्कृत भारत सभा' की ओर से सार्वजनिक शोक सभा का आयोजन किया था। उसमें लालाजी पर भाषण करते समय उनकी आँखों से आँसू टपक रहे थे। उन्होंने अपने समस्त सार्वजनिक जीवन में किसी भी राष्ट्रीय नेता की मृत्यु के बाद शोक सभा का आयोजन नहीं किया था और न ही श्रद्धांजलि परक शोक-सभा में भाषण दिया था। नत्थूराम गोड़से की तीन गोलियों से दि. 30.1.1947 को महात्माजी का खून हुआ, तब भी डॉ. बाबा साहब गांधीजी के विषय में या उनकी मृत्यु के विषय में एक शब्द भी नहीं बोले थे।

### जब डॉ. अम्बेडकर को किराये पर मकान नहीं मिला तो आर्य समाज ने डॉ. अम्बेडकर के आवास की व्यवस्था की

भारत की नस-नाड़ियों में जातीयता का विष इतना अधिक भरा हुआ है कि तथाकथित निम्न जाति के व्यक्तियों को मकान-मालिक किराये से भी अपने घर नहीं देते। प्रगतिशील महाराज श्री सयाजीराव गायकवाड़ की सेवा में रहते हुए भी मकान मालिकों की इस संकीर्ण प्रवृत्ति के कारण डॉ. अम्बेडकरजी को असाधारण मानसिक यातनाएँ सहन करनी पड़ी थीं, पर जो बात बड़ौदा में हुई वह मुम्बई में नहीं हुई। मुम्बई के भाटिया लोगों पर आर्य समाज का विशेष प्रभाव होने के कारण डॉ. अम्बेडकरजी को मुम्बई में आवासीय यातनाओं के दौर से नहीं गुजरना पड़ा।

8.12.1923 से 2.9.1930 तक लिखे अनेक पत्रों से यह पता चलता है कि लगभग सात वर्ष तक डॉ. अम्बेडकरजी के पत्र व्यवहार का पता परल मुम्बई स्थित 'दामोदर ठाकरसी हॉल' ही रहा। यह ठाकरसी घराना प्रगतिशील आर्य समाजी और सुसंस्कृत था। दामोदर ठाकरसी के पिताश्री मूलजी इाकरसी स्वामी दयानन्द जी की उपस्थिति में स्थापित विश्व की सर्वप्रथम 'आर्य समाज मुम्बई' की कार्यकारिणी के सभासद थे। प्रारंभ में आर्य समाज और थियोसॉफिकल सोसाइटी में जो ऐक्य स्थापित हुआ, उसका अधिकांश श्रेय मूलजी ठाकरसी को है, क्योंकि थियोसॉफिकल सोसाइटी के संस्थापक कर्नल अल्कॉट और मैडम ब्लैवेट्स्की को स्वामी दयानन्दजी का परिचय सर्वप्रथम मूलजी ठाकरसी ने ही दिया था। मूलजी ठाकरसी के सुपुत्र नारायण ठाकरसी को तो विश्व की सर्वप्रथम आर्य समाज का सर्वप्रथम उपाध्यक्ष होने का श्रेय प्राप्त है। मूलजी ठाकरसी के पौत्र श्री विट्ठलदास ने तो अपनी माताजी नाथीबाई दामोदर के स्मरणार्थ कर्वे विद्यालय को तत्कालीन 15 लाख रुपये प्रदान किये थे। आज इस विद्यालय ने विश्वविद्यालय का रूप धारण कर लिया है, जिसे हम सब लोग 'एन.एन.डी.टी. यूनिवर्सिटी' के रूप में जानते हैं। सम्भवत: अन्य अनेक ज्ञात-अज्ञात कारणों के अतिरिक्त ठाकरसी परिवार के आर्य समाजी संस्कारों में दीक्षित होने के कारण बड़ौदा में डॉ. अम्बेडकर को जिस प्रकार आवास विषयक यातनाएँ भोगनी पड़ी वैसी मुम्बई में नहीं। 'भारतीय बहिष्कृत समाज सेवक संघ' की ओर से महार बंधुओं को 'महार वतन बिल' के संबंध में सावधान करते हुए जो निवेदन निकाला था, उसके अन्त में डॉ. अम्बेडकर जी ने अपना स्पष्ट पता देते हुए लिखा है- 'दामोदर मूलजी ठाकरसी हॉल-परल-मुम्बई' इस प्रकार लगभग सात वर्ष तक डॉ. अम्बेडकरजी के पत्र व्यवहार का पता 'परल-मुम्बई' स्थित दामोदर ठाकरसी हॉल ही रहा।

मायावती जी! बौद्ध धर्म अपनाकर जातिवाद से मुक्ति नहीं मिलेगी। जातिवाद को समाप्त करने के लिए महर्षि दयानन्द के फौलादी भुजाओं की आवश्यकता है। तथाकथित वेदानुयायियों और पौराणिकों ने बौद्ध धर्म को भारतवर्ष से उखाड़ कर फेंक दिया। आज सारे भारत में बौद्ध धर्म का कोई नामोनिशान नहीं है। जातिवाद समाप्त करने के लिए पौराणिकों को समाप्त करना अनिवार्य है और पौराणिकों को समाप्त करने का एकमात्र मंच है आर्य समाज। अत: आप दल-बल सहित आर्य समाज में शामिल हों। बौद्ध धर्म तो विरक्ति और संन्यास की बात करता है और महिलाओं को भी संन्यास के लिए प्रेरित करता है। दयानन्द घोषणा करता है- आधार राष्ट्र की हो नारी सुभग सदा ही। आर्य समाज आपको राष्ट्र का आधार बना सकता है। आर्य समाज ही दलितों को सत्ता पर पूर्ण वर्चस्व के लिए तन-मन-धन से सहयोग दे सकता है। आर्य समाज बौद्धों की तरह राजनीति से विरक्ति का संदेश नहीं देता है। आप आर्य समाज के प्रस्ताव पर गंभीरतापूर्वक विचार करें और हम और आप जातिवाद के उन्मूलन के लिए राष्ट्रव्यापी आंदोलन चलाएं।

# सामूहिक जीव हिंसा हमारी संस्कृति तो नहीं

मेनका संजय गांधी
केन्द्रीय मंत्री

***विभिन्न धर्म-समुदायों में मूक जानवरों और पक्षियों को मारने की परिपाटी संस्कृति के नाम पर चली आ रही है। राजनेता भी इन क्रूर परिपाटियों को समर्थन देते नजर आते हैं। जब-तब बहस होती है लेकिन रोकथाम नहीं।***

कुछ महीनों पहले मैंने एक फिल्म देखी, जिसमें दिखाया गया था कि गोरों का एक समुदाय है, जो काफी अच्छा और कानून की पालना करने वाले लोगों काहै लेकिन उन्हें साल में एक बाद दीवानगी की हदें पार करने का हक है। उनको किसी भी अश्वेत को जान से मार डालने की कानूनन छूट मिली हुई है। फिल्म में ऐसे परिवार की कहानी दिखाई गई है, जो किसी अश्वेत की जान बचाता है तो कैसे पड़ोसी उसे अपना शिकार बनाते हैं। भारत में बकरीद पर कानूनी छूट है कि बकरी या किसी अन्य जानवर को मारा जा सकता है। सरकार या पुलिस को इससे कोई सरोकार नहीं है। लोग पश्चिम बंगाल और केरल में गाय को भी मारते हैं। हैदराबाद, केरल, तमिलनाडु, दिल्ली और मेरठ में ऊंटों व भैंसों को मारा जाता है जो वैध है। बकरी को जान से मारने को लेकर भी कई कानून है, लेकिन किसी को परवाह नहीं है। इन जानवरों का खून बह कर नदी के पानी में मिल जाता है। कुछ इलाके ऐसे हैं, जहां कच्चे मांस से पूरे इलाके में दुर्गंध फैल जाती है। समाज में हर तरह के क्रूर और अनावश्यक जीव हिंसा का विरोध समय-समय पर होता आया है चाहे वह किसी भी समुदाय से जुड़ी हो। देश में कई जगहों पर नई फसल की कटाई के दिन मकर संक्रांति को पशु बलि की परिपाटी रही है। कर्नाटक में एक कुप्रथा के तहत कई लोमड़ियों का शिकार किया जाता है। गायों को पीट-पीट कर बहते पानी में दौड़ाया जाता है। असम में देखा गया है कि पक्षी के शिकारी हजारों बुलबुलों को पकड़ कर ग्रामीणों को बेच देते हैं, जो उन्हें एक पिंजरे में कैद करके रखते हैं और ये बुलबुल पिंजरे में आपस में तब तक लड़ती हैं, जब तक कि इनमें से किसी एक की मौत ना हो जाए। आंध्रप्रदेश में लाखों मुर्गों को अंधेरे पिंजरों में रख उन्हें चोट पहुंचाने का खेल, गोवा में बुल फाइट, महाराष्ट्र में गाय व घोड़ों को दौड़ाने के खेल क्रूरता की पराकाष्ठा के उदाहरण हैं। इन खेलों के दौरान कभी-कभी तो इंसानों की भी मौत हो जाती है। हालांकि इनमें से कई खेलों पर अब कानूनी रोक है लेकिन कुछ राजनेता निजी हितों के चलते इनकी पैरवी करते नजर आते हैं। गुजरात में सात दिन के पतंग महोत्सव के दौरान तीन लाख से ज्यादा पक्षी मारे जाते हैं। चाइनीज मांझे पर रोक के बावजूद इसका इस्तेमाल पक्षियों के लिए सब जगह घातक साबित हो रहा है। जलीकट्टू भी इसी क्रूरता का एक ओर उदाहरण है जिस पर सर्वोच्च न्यायालय ने गत वर्ष ही रोक लगाई है। दरअसल किसी भी धर्म में ऐसी क्रूर हिंसा का उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन निजी स्वार्थों के चलते सभी अपनी संस्कृति का हवाला देते नजर आते हैं।

# ... और अब धृतराष्ट्रवाद

**अशोक राही**

**निस्संदेह** हम प्रगति कर रहे हैं। शनैः शनैः राष्ट्रवाद से धृतराष्ट्रवाद तक का सफर सफलतापूर्वक तय कर रहे हैं। आप कहेंगे कि यह राष्ट्रवाद तो समझ में आता है पर धृतराष्ट्र क्या है? कुछ खास नहीं जी। जब भी अपनों द्वारा कोई अत्याचार या दुराचार का काम देखो, तुरंत आंखें बंद कर लो। यही है धृतराष्ट्रवाद। क्या कहा? उदाहरण देकर समझाएं। उदाहरण देना तो हमने छठी-सातवीं के बाद ही बंद कर दिया। उन कक्षाओं में सवाल पूछे जाते थे- प्रत्येक क्रिया की विपरीत प्रतिक्रिया होती है, उदाहरण देकर समझाइए। उन दिनों ही उदाहरण देते याद करते-करते हमारी गुद्दी के बाल उड़ जाते थे तो आज क्या याद आएंगे। बहरहाल धृतराष्ट्रवाद को यूं समझिए देश के महान कहे जाने वाले विश्वविद्यालय में कुछ लफंगों ने एक लड़की को छेड़ा। इस बात का लड़कियों ने विरोध किया। समझदारों ने लड़कियों को समझाया- अरे लड़के ही लड़कियों को नहीं छेड़ेंगे तो कौन छेड़ेगा। समझाने पर भी लड़कियां नहीं समझीं तो विश्वविद्यालय प्रशासन ने पुलिस को बुलाकर उन पर लाठीचार्ज करवा दिया। किसी का सर फूटा, किसी की टांग टूटी। तो क्या हुआ। कम से कम लड़कियों को सबक तो मिला। अब कुछ लोग कह रहे हैं कि सरकार कुछ करे। अजी सरकार के पास यही काम बचा है क्या? सरकार मौन रह कर समूचे देश में विकास में जुटी है और विकास को न जाने क्या हो गया। विकास बढ़ने की बजाय सिकुड़ता ही जा रहा है। सरकार की यही अनदेखी ही धृतराष्ट्रवाद है। धृतराष्ट्र हमारे आदेश पुरुष हैं। अपनी औलादें षड्यंत्र करती रहें। आंख मूंद ले। संतानें उत्पात मचाती रहें। कुछ न देखो। दंभी पुत्र घर की औरतों का ही चीरहरण करते रहे! अंधे हो जाओ। यही आदर्श धृतराष्ट्रवाद है। आगे आप सोचें। क्या कह रहे हैं आप। आपने सोचना ही बंद कर दिया। वाह। आप तो सच्चे धृतराष्ट्रवादी हैं। बधाई।

# अब गरीबी भगाओ

**अशोक राही**

**जब** हम बच्चे थे तब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने नारा दिया था- गरीबी हटाओ। अब बुढ़ापे के द्वार पर दस्तक देकर जवानी छोड़ दी है, तब वर्तमान प्रधानमंत्री ने नया नारा दिया है- गरीबी भगाओ। अपने लड़कपन में हमने 'हटाओ' वाले नारे पर विश्वास किया था हालांकि शीघ्र ही हमें अहसास होने लगा कि श्रीमती गांधी ने देश के गरीबों के हाथों में एक झुनझुना थमा दिया है। उस झुनझुने को बजाते-बजाते हम खुद मंजीरे बन गए। लेकिन देश से न गरीब हटे न गरीबी। राजनीति के नए मसीहा पर तो हमें यकीन ही नहीं बचा। चुनावों से पहले जो पन्द्रह लाख रुपए खाते में आने का बेहद दिलचस्प, सपनीला, उत्साहवर्द्धक नारा दिया था तब हम इन पर लट्टू हो गए पर इन्हीं के खासजी ने जब उस वादे को जुमला करार दिया तो कसम से हमने अपना हाथ अपने कपाल पर जो मारा। अब ये महाशय गरीबी भगाओ की पूंगी बजा रहे हैं। पिछली सदी की बड़ी 'मैडम' ने हमें झुनझुना समझा औरइस सदी के भाईजी हमें पूंगी बना रहे हैं। एक बार भक्त-अभक्त यानी वर्तमान सत्ता को पसंद करने वाले और नापसंद करने वाले अपने कलेजे पर हाथ रख कर कहें कि क्या सचमुच गरीबों के नाम पर इस देश को उल्लू नहीं बनाया जा रहा है? गरीबी कोई पहाड़ नहीं है जो हट नहीं सकता। इस देश का आम आदमी अपनी गरीबी की चादर उतार फेंकने को तत्पर है लेकिन क्या हमारे नेता तैयार हैं? जब एक नेता का बेटा एक साल में ही अपना व्यापार सोलह हजार गुणा बढ़ा लेता है पूर्णतः कानूनी तरीके से, तो यह गुर सरकार इस देश के गरीब-गुरबों को क्यों नहीं सिखाती? तो भैया झुनझुनों, मंजीरों और पूंगियों। आपका काम है सिर्फ बजना। पहले कोई और 'बैंडमास्टर' था अब कोई और है। आप बजाने में विश्वास ही नहीं रखते। पता नहीं इस देश को झांसेबाजों से कब निजात मिलेगी।

# ओछी प्रवृत्ति!

***एक-एक सीट जीतने के लिए हर दल दलबदलू पर न सिर्फ दांव लगाता है बल्कि उसकी शान में मसीदे पढ़ने से भी परहेज नहीं करता।***

**राजनीति** में 'आयाराम-गयाराम' भी अजीब चीज है। जिसकी आलोचना हर दल जोर-जोर से करता है। लेकिन इसकी तासीर ऐसी है कि इसके बिना उसका गुजरा भी नहीं होता। हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव की रणभेरी बज चुकी है। नामांकन पत्र दाखिल करने का सिलसिला भी शुरू हो चुका है। ऐसे समय हिमाचल प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री अनिल शर्मा ने अपने पिता और पुत्र के साथ कांग्रेस छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया। शर्मा का आरोप है कि कांग्रेस उनके परिवार को नजरंदाज कर रही है। खास बात ये कि पार्टी छोड़तक समय अनिल शर्मा ये बतानेसे नही हिचके कि भाजपा ने उन्हें मंडी सदर सीट से टिकट देने का आश्वासन दिया है। कल तक भाजपा को कोसने वाले शर्मा ही नहीं उनेक पिता सुखराम को भी बहुत कुछ दिया है। पांच बार विधानसभा और तीन बार सांसद बनाने में कांग्रेस का ही योगदान रहा है। पार्टी ने उन्हें केन्द्र में मंत्री भी बनाया। हिमाचल और गुजरात में 'आयाराम-गयाराम' का खेल यूं ही चलने की संभावनाएं बताई जा रही हैं। ये पहला मौका नहीं है जब कोई मंत्री पार्टी छोड़ किसी दूसरे दल में गया हो। हर चुनाव में दल-बदलुओं की नई जमात देश के सामने आती है। एक-एक सीट जीतने के लिए हर दल दलबदलू पर न सिर्फ दांव लगाता है बल्कि उसकी शान में कसीदे पढ़ने से भी परहेज नहीं करता। भाजपा इन दिनों अपने आपको दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बताने लगी है। दस करोड़ से अधिक सदस्य होने का दावा भी करती है। उसका दावा सही भी हो सकता है तो फिर सवाल क्यों नहीं उठना चाहिए कि इतनी बड़ी पार्टी के पास क्या चुनाव लड़ने और जीतने लायक समर्पित कार्यकर्ता नहीं हैं? और अगर हैं तो उसे दूसरी पार्टी के नेता को टिकट देने का आश्वासन देकर अपनी पार्टी में क्यों शामिल करना चाहिए? इस सवाल का जवाब भाजपा के साथ-साथ तमाम उन दलों को तलाशना चाहिए जो सत्ता पाने के लिए किसी भी नेता को दोस्त से दुश्मन और दुश्मन से दोस्त बनाने में संकोच नहीं करते। अनिल शर्मा सरीखे नेता न किसी के सगे हुए हैं और न होंगे। उन्हें मोह है तो सिर्फ कुर्सी से।

## फिनलैंड का एजुकेशन मॉडल दे रहा है विकसित देशों को चुनौती....

# सिर्फ काबिलियत की ही नहीं बेहतर इंसान बनने की भी शिक्षा

***दुनिया के नक्शे पर एक छोटा सा देश फिनलैंड ग्लोबल एजुकेशन के क्षेत्र में तेजी से रोल मॉडल बनकर उभरा है। पीसा रैंकिंग में पिछले कुछ वर्षों से वह लगातार टॉप-15 देशों में है। इसकी सबसे बड़ी वजह बनी है एक समान राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली।***

आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि फिनलैंड में स्कूली स्तर पर निजी शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। स्कूली शिक्षा पूरी तरह से सरकारी हाथों में है। वहां की शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी खासियत यह है कि बच्चों को प्रतियोगिता में धकेलने के बजाय सहयोग के आधार पर उन्हें बेहतर परफॉर्म करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

पीसा की मैथ, रीडिंग और विज्ञान की वर्ल्ड रैंकिंग टेस्ट में वहां के बच्चे लगातार टॉप-10 में पोजिशन बनाने में सफल रहे हैं। यह प्रदशन अमरीका समेत अन्य तमाम विकसित देशों के लिए चौंकाने वाला है, क्योंकि वहां की व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के लिए फिनलैंड ने गंभीर चुनौती पेश की है और उन्हें बहुत पीछे छोड़ दिया है। फिनलैंड की स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि दुनियाभर के शिक्षाविद अमरीका तक को उससे सीख लेने की सलाह देने लगे हैं।

***आदर्श पेशा*** - शिक्षण कार्य को वहां पर एक आदर्श पेशा माना जाता है। वहां के शिक्षकों का वेतन अमरीका से ज्यादा है। स्कूली शिक्षा को विकास की नींव माना जाता है। एक शिक्षक बनने के लिए न्यूनतम योग्यता मास्टर डिग्री है, जो अमरीका के रेजिडेंसी प्रोग्राम के समान है।

***अतिरिक्त सहायता*** - स्कूली शिक्षा निशुल्क है। उन बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जो मानसिक स्तर पर दूसरों से कमजोर होते हैं। ऐसे 30 प्रतिशत बच्चों को अतिरिक्त सहायता मुहैया कराई जाती है। स्कूली शिक्षा के बाद 66 प्रतिशत छात्र कॉलेज की शिक्षा हासिल करते हैं और 43 प्रतिशत वोकेशनल कोर्स में जाते हैं।

***सही सोच पर जोर*** - पूरी शिक्षा व्यवस्था इस सोच पर आधारित है कि प्रतियोगिता से बचे अच्छे इंसान नहीं बन पाएंगे। उनमें बेहतर समझ नहीं पैदा होगी, बल्कि प्रतियोगिता की वजह से वह दूसरे बच्चों से जलन रखने लगें और उनमें बुरी-भली भावनाएं घर करने लगेंगी।

***यह है विशेषता*** - छह साल तक के बच्चों को औपचारिक रूप से स्कूली शिक्षा का हिस्सा नहीं माना जाता है। सरकारी शिक्षा व्यवस्था के तहत सातवें साल में बच्चे को औपचारिक शिक्षा में प्रवेश लेते हैं। इससे पहले प्री-स्कूलिंग और डे-केयर में बच्चों को अनौपचारिक शिक्षा दी जाती है। 16वें साल में वहां के बच्चे पहली बार एक मानकीकृत परीक्षा में शामिल होते हैं। बच्चों को होमवर्क नहीं दिया जाता है। घर पर अभिभावकों की जिम्मेदारी होती है कि वो बच्चों को आदर्श जीवन मूल्यों की शिक्षा दें। वहां शिक्षक बनने के लिए न्यूनतम योग्यता एमए (पीजी) है।

**पीसा रैंकिंग**

| देश | गणित | रीडिंग | विज्ञान |
|---|---|---|---|
| फिनलैंड | 13 | 05 | 04 |
| अमरीका | 40 | 25 | 24 |

***कैसे पहुंचा इस मुकाम तक*** - इस मुकाम तक पहुंचने के लिए फिनलैंड में पिछले चार दशक से प्रयास किए जा रहे हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्राथमिक शिक्षा से ही नवाचार को शामिल किया गया है। वहां केन्द्रीयकृत प्रतियोगी और मूल्यांकन आधारित शिक्षा व्यवस्था को ठुकराकर निशुल्क शिक्षा का मॉडल विकसित किया गया है, जिसका सार्थक परिणाम अब दिखने लगा है।

***एसएसपी इफेक्ट*** - स्कूल-स्टूडेंट-पैरेंट्स (एसएसपी) के बीच तालमेल पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता है। जैसे स्कूल में छात्रों को पढ़ाना, होमवर्क कराना, शारीरिक विकास के लिए हर क्लास के बाद बच्चों को 15 मिनट और पूरे दिन में 75 मिनट खेलने का अवसर देना शामिल है। अमरीका में केवल 27 मिनट खेलने को मिलता है। सामाजिक मूल्यों को विकसित करने की जिम्मेदारी अभिभावकों की होती है।

***सहयोग की सीख*** - शिक्षाविद पासी सालबर्ग का कहना है कि बच्चों का मनोबल प्रतियोगिता के बदले आपस में विश्वास और सहयोग पर बल देने के लिए बढ़ाया जाता है। किसी भी विषय को रटने पर जोर न देकर जवाब देने के बेहतर तरीके बताए जाते हैं।

***विज्ञान में सिर्फ 16 बच्चे*** - विज्ञान की एक कक्षा में 16 से अधिक बच्चे नहीं होते। इसके पीछे सोच यह है कि बच्चों से प्रैक्टिकल ज्यादा से ज्यादा कराए जाएं। हर छात्र को अधिक से अधिक समय प्रैक्टिकल के लिए मिले और शिक्षक की नजर हर छात्र के विकास पर रहे।

# आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का विवाद
# रजिस्ट्रार सोसायटी किसी भी पक्ष के चुनाव का अनुमोदन नहीं करेगी

राजस्थान के समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि मान्यनीय राजस्थान उच्च न्यायालायें के आदेशों की अनुपालना में जिला कलेक्टर जयपुर के आदेश दिनांक 29.05.2013 के द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर के चुनाव कराये। इसके बाद प्रतिनिधि सभा के 15.09.2016 को चुनाव सम्पन्न हो गये। हमारे पक्ष ने इस चुनाव को चुनौती देते हुए कहा था कि विवाह माफिया ने अवैध व अनैतिक तरीके अपनाकर कार्यालय में बैठकर मतदाताओं की सूची तैयार की और सहकारिता विभाग के अधिकारियों से साठगांठ करके सैकड़ों अस्तित्वहीन आर्य समाजों के सैकड़ों प्रतिनिधियों को स्वीकृत करा लिया। हमने दूसरे पक्ष के मध्यक विजय सिंह भाटी जी को अनेक पत्र लिखकर अनुरोध किया कि आर्य समाज के हित में हम सब मिलजूल कर विधान के अनुसार चुनाव करा दें परन्तु उन्होंने हमारे प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और एक ही रट लगाते रहे कि हमारा चुनाव तो हाई कोर्ट के आदेश से कलेक्टर ने कराया है। अत: यह आदेश कयामत तक चलेगा अब हम कोई समझौता करके विधान के अनुसार कोई चुनाव कराने के लिए तैयार नहीं है। अत: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सत्यव्रत सामवेदी ने अंतरंग सभा को भंग कर विधान के अनुसार चुनाव करा दिये जिसकी पुष्टि चुनाव अधिकारी राजस्थान उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अभिभाषक सुधीर कुमार तिवाड़ी ने 06.06.2015 को की। दूसरे पक्ष ने भी 23.06.2015 को अपने चुनाव करा लिये। हमारे पक्ष ने 15.09.2016 को पुन: चुनाव करा लिये। दोनों पक्षों ने निर्वाचित अंतरंग सभा, पदाधिकारियों की सूची रजिस्ट्रार सोसायटी को भेजी परन्तु वाद न्यायालय में लंबित होने के कारण रजिस्ट्रार सोसायटी ने दोनों पक्षों को मान्यता नहीं दी। दोनों पक्षों में सुलहनामा कराने के लिये दिल्ली में मीटिंग रखी गई जिसमें दूसरे पक्ष के अध्यक्ष श्री विजय सिंह भाटी नहीं आये और सुधीन कुमार शर्मा नामक मंत्री को भेज दिया। उस बैठक में सुधीर कुमार शर्मा यही रट लगाता रहा कि हमारे चुनाव तो हाई कोर्ट के आदेश से जिला कलेक्टर ने कराये है अत: हम कोई समझौता करने के लिए तैयार नहीं है। यह वही सुधीर कुमार शर्मा है जो किसी आर्य समाज का नकली मानचित्र प्रस्तुत कर मंत्री बन गया जबकि असली मानचित्र हमारे पास है जिसमें सदस्यों की सूची तक में इसका नाम नहीं है। राजस्थान उच्च न्यायालय ने सुधीर कुमार शर्मा को मंत्री पद पर कार्य करने पर छह महीने तक निषेधाज्ञा जारी की थी। परन्तु हमारे पक्ष ने राजस्थान उच्च न्यायालय से याचिका वापस लेकर जिला न्यायालय में मुकदमा दायर किया। जो अभी तक लंबित है। रजिस्ट्रार संस्थाओं का इस संबंध में आदेश अविकल रूप से निम्न प्रकार है-

हवा सिंह आर्य, प्रधान
कार्यालय रजिस्ट्रार (संस्थाएं) सहकारी समितियां जयपुर
क्रमांक:- 276-77 दिनांक 15.09.2017

1. श्री चक्रकीर्ति सामवेदी
   उपमंत्री
   आर्य प्रतिनिधि सभा, राजापार्क, जयपुर
2. श्री सुधीर कुमार शर्मा
   मंत्री
   आर्य प्रतिनिधि सभा राजापार्क, जयपुर

विषय:- **कार्यालय में प्रस्तुत कार्यकारिणी सूची मूल ही वापस लौटाने बाबत।**
प्रसंग:- **आपके द्वारा कार्यालय में प्रस्तुत समिति की कार्यकारिणी की अलग-अलग सूची।**

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि आर्य प्रतिनिधी सभा राजापार्क राजस्थान पंजीयन क्रमांक 1/1896 की कार्यकारिणी सूची श्री चक्रकीर्ति सामवेदी उपमंत्री द्वारा प्रस्तुत की गई है जिसमें 15.09.2016 को चुनाव सम्पन्न होना तथा उसमें श्री हवासिंह प्रधान तथा श्री ओ.पी. वर्मा को मंत्री पद पर अंकित किया गया है। समिति की ही एक अन्य कार्यकारिणी सूची मंत्री आर्य प्रतिनिधि द्वारा प्रस्तुत की गई है जिसमें निर्वाचन दिनांक 11.06.2017 तथा श्री विजय सिंह भाटी प्रधान तथा श्री सुधीर कुमार शर्मा मंत्री पद पर अंकित किये गये है। अत: उक्त प्रस्तुत पत्रादि से कार्यकारिणी से सम्बन्धित विवाद परिलक्षित होता है। अत: दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तुत पत्रादि मूल ही लौटाकर लेख है कि वास्तविक कार्यकारिणी का निर्धारण सक्षम न्यायालय से करवाकर अनुतोष प्राप्त करें।

रजिस्ट्रार(संस्थाऐं)
सहकारी समितियां, जयपुर

## आर्य नीति में सामवेदी जी के स्वामी अग्निवेश पर प्रकाशित लेख पर प्रो. श्योताज सिंह की प्रतिक्रिया

आदरणीय सामवेदी जी,

दिनांक:23.10.2017

सादर नमस्ते।

सामवेदी जी आपका नाम सत्यव्रत है। मैं ऐसा मानता हूँ कि आपने अपने जीवन में सत्य बोलने का व्रत ले रखा है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्यथा हो तो जानकारी देने का कष्ट करें। वस्तुत: स्वामी अग्निवेश जी के प्रति आपने लिखा है कि स्वामी अग्निवेश का दृष्टिकोण वही है जो महात्मा गांधी, स्वामी विकेकानंनद और रामकृष्ण परमहंस का था। यह मानवतावादी दृष्टिकोण है। परन्तु आर्य समाज इस दृष्टिकोण से असहमत है। उसका स्पष्ट मत है कि हम सब मुसलमानों को शुद्ध करके आर्य बनाएंगे और वेदानुयायी बनाएंगे, देवबंद को वेदों का प्रचार केन्द्र बनाएंगे।

आदरणीय सामवेदी जी, आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को सम्भवत: आपकी भांति उस समय इतना बड़ा इल्हाम नहीं होगा अन्यथा वे 10 अप्रैल, 1875 को आर्य समाज की स्थापना के समय अल्लाह राखा रहमतुल्लाह सोनावाला से 5000 रु. की धनराशि (जो आज की तारीख में लगभग एक करोड़ होगी) स्वीकार करने से पूर्व इस मुसलमान को शुद्ध कर वेदानुयायी बनाते, किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। लाहौर में अपने 40 दिन के प्रवास में वे डा. रहीम खां अन्सारी के मेहमान बनने से पहले डा. अन्सारी को शुद्ध कर वेदानुयायी बनाते। अपने जोधपुर प्रवास के समय वे श्री फैजुल्लाह जी की कोठी में ठहरने से पहले उसे शुद्ध कर वेदानुयायी बनाते।

काश!....उन्हें उस समय सलाह देने वाला आप जैसा योग्य सत्वव्रती सामवेदी विद्धान नही मिला। आप अभी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में सभी अधिकारियों में सबसे अधिक आयु के नेता है और सभा के वरिष्ठ उपप्रधान भी हैं। इतने वर्षों आप इस पद पर विराजमान रहे, आपने स्वयं अपने जीवन में दुनियां को 150 करोड़ से अधिक मुसलमानों में से कितने लाख मुसलमानों को शुद्ध कर वेदानुयायी बनाया। कृपया जानकारी उपलब्ध कराकर आर्य समाज में अपने स्वयं के नेतृत्व को गौरवान्वित करने का कष्ट करें।

आपने लिखा है कि "स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में संचालित सार्वदेशिक आर्य प्रतितिनिधि सभा के पास एक दृष्टि है, क्रांतिकारी कार्यक्रम है। यह सार्वदेशिक सभा साम्प्रदायिकता एवं जातिवाद के विरोध में राष्ट्रीय आंदोलन चलाना चाहती है। अस्पृश्यता निवारण, समान शिक्षा पद्धति, गो रक्षा, मजदूरों और किसानों का शासन, स्त्रियों का समाज में सर्वोच्च स्थान, आधिदैविक शांति के लिए अग्निहोत्र का प्रचार, आर्थिक विषमता को समाप्त करना आदि अनेक क्रांतिकारी मुद्दे हैं जिसमें स्वामी अग्निवेश का सहयोग देश में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है" ....."लेकिन स्वामी आर्यवेश की अध्यक्षता वाली सभा अपने अस्तित्व की आखरी लड़ाई लड़ रही है। और स्वामी अग्निवेश के आर्य समाजी विरोधी क्रिया कलापों से सभा की स्थिति कमजोर होती जा रही है"। आपने आगे भी लिखा है -"कि हमारी सभा का कमजोर पक्ष यह है कि हमें एवं स्वामी अग्निवेश को एक ही थैली का चट्टा बट्टा मानते हैं और यह मानते हैं कि स्वामी अग्निवेश ने जो वक्तव्य दिया है उसे स्वामी आर्यवेश की अध्यक्षता वाली सभा का समर्थन प्राप्त है।"

सभा की रक्षा के लिए यह भ्रांति दूर करनी होगी और हमें यह घोषणा करनी होगी कि स्वामी अग्निवेश के जो विचार आर्य समाज के अनुकूल हैं उसी का हम समर्थन करते हैं। आर्य समाज के प्रतिकूल यदि कोई विचार है तो वह उनका व्यक्तिगत मामला है उसका सार्वदेशिक सभा से कोई सम्बन्ध नही है, "अपने मित्र की गलत बातों का समर्थन करना भी मित्रता पर कलंक है"।

उपरोक्त विवरण को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी लम्बी बीमारी एवं लम्बे इलाज की प्रक्रिया से आपकी बुद्धि विस्मृति का शिकार होकर इतनी कुंठित हो गई है कि चार माह पूर्व ही इसी 'आर्य नीति' में स्वामी अग्निवेश जी की प्रशंसा में पुल बान्धे थे और स्वामी आर्यवेश और स्वयं (सामवेदी) को तथा श्री पं. माया प्रकाश त्यागी, रमाकांत सारस्वत एवं एक अन्य को पंच प्यारे की भूमिका में आकर अग्निवेश के नेतृत्व में काम करेंगे। आर्य नीति के पिछले अंक निकाल कर देख लें, यदि न मिले तो मुझे सूचित करना मैं भिजवा दूंगा।

इस लेख में आपने स्वामी अग्निवेश से क्रांतिकारी नेतृत्व के लिए केवल एक वर्ष का समय मांगा था। आपके इस प्रस्ताव के उत्तर में स्वामी अग्निवेश ने अपना एक वर्ष ही नहीं, वरन् शेष जीवन को भी इस कार्य में लगा देने का आश्वासन दिया था और बार-बार आग्रह किया कि इन पंच प्यारों के साथ शीघ्रातिशीघ्र एक बैठक करा दीजिए, किन्तु शायद आपके चाहने पर भी बैठक नहीं हो पायी और कुछ समय पश्चात् आप अस्वस्थ हो गये।

आज आप उसी अग्निवेश से मित्रता को कलंक बता रहे है। आप जैसा सुलझा हुआ विद्वान् सत्यव्रती और सामवेदी कुछ चन्द महीनों में ही अपने ही लिखे को कैसे झुठला सकता है यह बात समझ से परे है।

आशा है आप मेरी बातों पर गम्भीरता से चिन्तन-मनन करेंगे और मेरे इस पत्र को आर्य नीति में प्रकाशित कर आर्य नीति के अन्य पाठकों की प्रतिक्रिया भी लेंगे।

आपके शीघ्र पूर्ण स्वस्थ होने और लम्बी आयु की कामना के साथ,

भवदीय,

प्रो. श्योताज सिंह
महामंत्री

# धुंधली है उम्मीदें!

**कितने मंत्रियों, सांसदों और विधायकों के खिलाफ कितनी ही जांचें हो चुकी लेकिन नतीजा आज तक कुछ नहीं निकला।**

देश में छाए भ्रष्टाचार के कुंहासे के बीच कभी-कभी चमकने और गजरने वाली बिजली भ्रष्टाचार मुक्त भारत की धुंधली-सी उम्मीद जगाती है। ऐसी ही उम्मीद दो दर्जन विधायकों के आयकर जांच के दायरे में आने से लगी है। सत्तर सालों में यह पहला मौका है जब विधायकों की अप्रत्याशित रूप से सम्पत्ति बढ़ने के मामले में आयकर विभाग सख्त हुआ है। विधायकों पर आरोप सही पाए गए तो उन पर तीन सौ फीसदी जुर्माना के साथ उनकी सदस्यता भी जा सकती है। बिहार के इन दो दर्जन विधायकों की सदस्यता क्या समाप्त हो जाएगी? यह कहना बहुत मुश्किल है। हर सरकार भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने का प्रयास करती है लेकिन जमीनी हकीकत सबके सामने है। बिहार ही क्यों, देश के किसी भी राज्य के सांसद-विधायकों की सम्पत्ति की जांच ईमानदारी के साथ कर ली जाए तो बिहार जैसे ही परिणाम सामने आएंगे। अधिकांश जनप्रतिनिधि अपने आपको समाज सेवा से जुड़ा बताते है। रोजगार के स्थायी साधन नहीं होने के बावजूद साल-दर-साल उनकी सम्पत्ति कैसे बढ़तीर जाती है? कितने मंत्रियों, सांसदों और विधायकों के खिलाफ कितनी ही जांचें हो चुकी लेकिन नतीजा आज तक कुछ नहीं निकला। भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकांश राजनेताओं-अधिकारियों का बाल भी बांका नहीं होता। सीबीआई, आयकर विभाग अथवा प्रवर्तन निदेशालय की कार्रवाई अपने अंजाम तक पहुंच ही नहीं पाती। कोई डरे तो क्यों? गैर सरकारी संगठन एसोएिशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स और इस जैसे कुछ संगठन धन्यवाद के पात्र हैं जो राजनेताओं की बढ़ती सम्पत्ति के आंकड़े ढूंढ़-ढूंढ़ कर निकालते रहते हैं। वर्ना तो किसे फुरसत पड़ी है किसी के बैंक खातों में झांकने की।

# वह आजादी जिसका हम सब सपना देखते हैं

## *दिल्ली से लेकर हैदराबाद व गुवाहाटी तक शिक्षा परिसरों में नए भारत के बदलाव की हवा*

-: प्रीतीश नंदी :-
वरिष्ठ पत्रकार और फिल्म निर्माता

**कोलकाता** में युवावस्था में मैंने पूर्वी पाकिस्तान के स्वतंत्रता संघर्ष को बहुत निकट से देखा। वहां हुआ युद्ध दो बातों पर आधारित था। एक, बंगाली भाषा के साथ पश्चिमी पाकिस्तान के शासकों का अपमानजनक व्यवहार। वे उर्दू को राष्ट्रीय भाषा बनाने पर तुले हुए थे ताकि देश को एकजुट कर सकें।

यह हमेशा से तानाशाही शासन का सपना रहा है कि विविधता को नष्ट करें और राष्ट्रवाद के वेश में आम सहमति को बलपूर्वक लागू करें। दो, सरकार और वहां तैनात पाकिस्तानी सेना की धौंस में न आने से पूर्वी पाकिस्तान के युवा छात्रों का साहसी इनकार। शिक्षा परिसर विरोध का अग्रिम मोर्चा थे। कविता इस युद्ध का तोपखाना बन गई। रवींद्रनाथ टैगोर उनकी प्रेरणा थे और बंगलादेश के कवियों के शब्दों से हथियार की तरह लैस युवाओं ने निडर होकर उस शक्तिशाली पाकिस्तानी सेना का सामना किया, जो उस वक्त अजेय लगती थी। युद्ध के मेरे पसंदीदा कवियों में से एक थे शम्स-उर-रहमान। हम भी तब बहुत गुस्सा हुए थे जब हम पर हिंदी थोपने के प्रयास किए गए थे। इसे शासकों, उत्तर प्रदेश व बिहार के उन लोगों की भाषा समझा जाता था, जो दिल्ली को चलाते थे और सारी नीतियां मोटेतौर अपने हित में बनाते थे। हम इसे हिंदी साम्राज्यवाद की तरह देखते थे। इसीलिए हम सहजता से पूर्वी पाकिस्तान के युवा छात्रों के साथ जुड़ गए। मैंने तब सीमा पार के कई कवियों की कविताओं का अनुवाद किया था। उनमें से एक आजादी पर लिखी शम्स उर रहमान की प्रसिद्ध कविता थी। अब तो मुझे मेरे अनुवाद के ठीक-ठीक शब्द याद नहीं है लेकिन, यह कविता कुछ ऐसी थी। कुछ अंश :

स्वतंत्रता, तुम/ टैगोर की अमर कविता हो, उनके शब्द जो कभी नहीं मिटेंगे/स्वतंत्रता, तुम/ काजी नजरुल हो, बेतरतीब बालों वाले कवि अपनी ही रचना से उन्मादित/ स्वतंत्रता, तुम/भाषा दिन पर शहीद स्मारक पर उमड़ी बावली भीड़ हो/ स्वतंत्रता, तुम/ आगे बढ़ते जुलूस में ऊंचा उठाया ध्वज, ऊंचे स्वर में लगाए गए नारे हो/ स्वतंत्रता, तुम/ खेतों में काम करता किसान, पसीने से चमकती उसकी देह हो/ स्वतंत्रता, तुम/ गांवों के पोखर में तैरती लड़की हो/ स्वतंत्रता, तुम/ धूप में तपकर तांबे जैसी हो गई फैक्ट्री वर्कर की भुजा हो/ स्वतंत्रता, तुम/ अंधेरे में टोह लेती स्वतंत्रता सेनानी की आंखों की चमक हो.../स्वतंत्रता, तुम/श्रावण में उमड़ रही मेघना नदी हो/ स्वतंत्रता, तुम/ मेरे पिता की नमाज की सुंदर चटाई हो, छूने में मखमल/...स्वतंत्रता, तुम/ फूलों के बगीचे, पक्षियों का गीत, बरगद की पत्तियों की सरसराहट के बीच मौजूद मेरा मकान हो/ वह कविता हो जो मैं अपनी पत्रिका में जैसी मर्जी हो वैसी लिखता हूं।

अंतिम पंक्ति सबकुछ कह देती है। 'स्वतंत्रता' की जगह 'आजादी' लिख दीजिए और आप समझ जाएंगे कि हमारे छात्र अपने लड़खड़ाते शब्दों में क्या कहने का प्रयास कर रहे हैं। चाहे जेएनयू हो या बीएचयू या जहां भी वे विरोध कर रहे हों। कॉलेज के सर्वश्रेष्ठ साल कॅरिअर की दिशा में पढ़ने के लिए नहीं हैं। वे यह बताने के लिए हैं कि आपका दिल कहां पर है, आप की अंतरात्मा क्या कहती है। यही सीखते हुए तो हम बड़े हुए। हमने भी यही किया। जब हमने विरोध का परचम लहराया और उसके लिए खड़े हुए, जो हमें लगता था कि सही है। यह वह राष्ट्रवाद था, जो हमने टैगोर, विवेकानंद और विद्यासागर से सीखा था, वह सपना था। आपातकाल के महीनों में जयप्रकाश नारायण ने हमें यही सिखाया। विद्यार्थी हमेशा राष्ट्रीय राजनीतिक का मंच तैयार करते हैं। यही वजह है कि सारे कैंपस में छात्र संगठन संघ परिवार की छात्र इकाई एबीवीपी को हराने के लिए एकजुट हो रहे हैं। जेएनयू हो, हैदराबाद यूनिवर्सिटी हो, गुवाहाटी हो या दिल्ली यूनिवर्सिटी या राजस्थान यूनिवर्सिटी पैटर्न एक ही दिखाई देता है। महसूस किया जा सकने वाला बदलाव दिख रहा है।

भिन्न राजनीतिक संबंधों वाले भिन्न गुट शक्तिशाली एबीवीपी का सामना करने के लिए एकजुट हो रहे हैं- और हां बार-बार जीत भी रहे हैं। हम सबके लिए इन छात्रों से यह सीखने का वक्त है कैसे एक विजेता टीम तैयार की जाती है। और नए भारत को कैसे समर्थन दें जो पैसे व शक्ति के फैंटसीपूर्ण वादों के आगे जाता है (कमर तोड़ करों के भी, जिसने हम सबको पंगु बना दिया है)। और कैसे उस नए राष्ट्र के बारे में बात करें जो उम्मीद, बदलाव और घिसे-पिटे अतिराष्ट्रवाद और बेलगाम नफरत के आगे देखने के साहस की राजनीति पर आधारित है। यही वह भारत होगा जिसके साथ आप, मैं और हमारे आसपास का हर व्यक्ति अपनी पहचान जोड़ सकेंगे।

# अन्नदाता को न बनाएं मोहताज

उपेन्द्र शर्मा

**राजस्थान** में करीब 68.4 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, जिसका सीधा सा अर्थ है कि लगभग 4 करोड़ 70 लाख लोगों की जिन्दगियां कृषि से जुड़ी हैं। इतनी बड़ी आबादी सरकार के चतुर्थ और तृतीय श्रेणी के मुलाजिमों से भी खराब जिन्दगी बसर करती है। राज्य सरकार जहां अपने मुलाजिमों के लिए दिवाली के मौके पर बोनस और सातवां वेतनमान लागू कर वाह-वाही लूटना चाह रही है, वहीं किसानों को सरकारी समर्थन मूल्य तक उनकी उपज के एवज में नहीं मिल रहा है। किसानों के लिए विभिन्न फसलों के समर्थन मूलय में पिछले 15-20 वर्षों में सामान्य बढ़ोत्तरी ही हुई है, जबकि सरकारी नौकरों की पगार में दो-ढाई गुणा तक इजाफा हुआ है। पूरे राज्य में ऐसे दो-चार सौ किसान परिवार भी ढूंढना मुश्किल है, जिन्हें अपनी उपज का पूरा समर्थन मूल्य मिलता हो। कहीं पर सरकारी कारिन्दे दाने में खराबी बता देते हैं, तो कहीं रंग में, कहीं वजन में कहीं किसी और बात में। कहीं कोई मॉनिटरिंग राज्य सरकार के स्तर पर नही की जा रही है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि किसानों को पूरा समर्थन मूल्य प्राप्त हो।

एक मिसाल देखिए कि इन दिनों मूंग, उड़द और तिल का समर्थन मूल्य सरकार ने क्रमश: 5575, 5400 और 5200 रुपए प्रति क्विंटल घोषित किया हुआ है। जबकि इन्हें उपजाने पर राष्ट्रीय स्तर पर लागत आती है क्रमश: 7500, 4517 और 5706 रुपए प्रति क्विंटल। राज्य में यह लागत होती है लगभग 5800, 5600 और 6500 रुपए प्रति क्विंटल और बाजार में किसानों को मिल रहा है सिर्फ 3200 से 4500 रुपए प्रति क्विंटल। ऐसे में किसानों के लिए खेती करना फायदे का सौदा होना तो दूर की बात है, उनके लिए उनका घर चलाना भी बेहद चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। यूं तो केन्द्र और राज्य सरकार दोनों ने ही हाल ही घोषणाएं की हैं कि 2022 तक राज्य के किसानों की वार्षिक आय दुगुनी करना चाहते हैं, लेकिन फिलहाल तो स्थिति कुछ ऐसी है कि किसानों की जान पर बन आई है। कांग्रेस पार्टी द्वारा राज्य सरकार पर लगाए गए आरोपों को देखें तो राज्य में 70 किसान गरीबी के चलते आत्महत्या कर चुके हैं।

सीकर में जबरदस्त किसान आंदोलन हाल ही हुआ है और जल्द ही किसानों का एक बड़ा प्रदर्शन मुख्यमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र झालावाड़ में होने वाला है। ऐसे में सरकार को समय रहते किसानों के गुस्से और असंतोष को समझना चाहिए। किसानों के नफे-नुकसान को सिर्फ राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए। किसानों की उन्नति और खुशहाली से देश उन्नति करता है। अगर किसान खुशहाल नहीं होंगे, तो वे मजदूर बनकर एक नई आबादी के रूप में शहरों में पहुंचेंगे, जिनके लिए रोटी, कपड़ा और मकान का प्रबंध करना सरकारों के लिए लगभग असंभव है। इससे बेहतर है हर वो प्रयास किया जाए, जिससे किसान गांवों में ही सम्पन्न और खुशहाल बन सके और उसकी पहली सीढ़ी है ऋण माफी और फसलों का पूरा समर्थन मूल्य उन्हें देना।

# 59 लोगों को जिंदा जला देना, सभी हत्यारों की फांसी माफ कर देना और राष्ट्र का चुपचाप रहना

-: कल्पेश याग्निक :-

***'सबसे बड़ा अन्याय वह है जो न्याय के नाम पर किया जाए।'- अज्ञात***

जब गुजरात हाई कोर्ट ने गोधरा कांड में 59 लोगों को जिंदा जलाने को पूर्व-नियोजित षड्यंत्र सिद्ध पाया है – तो फिर फांसी की सजा पाए हत्यारों पर नरमी क्यों की?

गोधरा कांड भारतीय इतिहास को थर्रा देने वाला एक कलंकित कृत्य है। इस नरसंहार ने समूचे देश को बदलकर रख दिया। 27 फरवरी 2002 को जिस तरह ठंडे दिमाग से, खूब सोच-समझकर हमले और हत्याओं के लिए चुना गया, वह वीभत्स है।

और न्याय के नाम पर शर्मनाक। अन्याय का प्रतीक।

पूरे 15 वर्ष बीत गए, किन्तु धू-धू कर जले, तबाह हुए और निदोर्षों का श्मशान बने उस एस-6 कोच की ही तरह न्याय की आशा भी तहस-नहस हो चुकी है।

दस साल बाद, प्रमुख साजिश रचने वाले 11 अपराधियों को फांसी मिली थी। यानी स्पेशल ट्रायल कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई थी।

फांसी तो किसी हत्यारे को मिलती ही नहीं है। किन्तु सजा तो सुनाई जाए! वह, माफ हो गई। क्यों? किन्तु किसी को भी कोई फर्क नहीं पड़ा। किसी विद्वान ने कोई बहस नहीं की। चुप। क्योंकि इसे 'रेअरेस्ट ऑफ रेअर' केस नहीं माना गया।

कोई 27 महिलाएं, 10 छोटे-छोटे बच्चों सहित 59 यात्री अचानक, भारी-भरकम भीड़ को ट्रेन में बलपूर्वक घुसते, पेट्रोल छिड़कते और आग लगाते देखें – या नींद में ही रह जाएं और कुछ न देख पाएं – तो कल्पना भी नहीं की जा सकती कि क्या बीती होगी?

क्या इससे भी क्रूर, इससे भी जघन्य, इससे भी बर्बर कुछ और चाहिए न्याय की देवी को – जो 'रेअरेस्ट ऑफ रेअर' माना जाएगा?

एक घृणा की अंतहीन श्रृंखला गोधरा कांड से आरंभ हुई। उसके बाद हुए भीषण और अमानवीय कृत्यों से भरे दंगों ने समूचे राष्ट्र को स्तब्ध कर दिया।

उसके बाद हुए गुजरात चुनाव की रिपोर्टिंग में कोई चार हजार किलोमीटर नाप चुकने के बाद मेरी दूसरी रिपोर्ट का हेडलाइन ही था 'गोधरा से गांधीनगर तक : घृणा ही घृणा।'

ऐसा चरित्र बदला था उन दंगों ने। कोई अब उन घिनौने दिनों को याद करना नहीं चाहता। करना भी नहीं चाहिए।

लाइफ हेज मूव्ड ऑन। हमें भी आगे बढ़ जाना चाहिए। किन्तु आगे बढ़ने का अर्थ अन्याय को चुपचाप सहना नहीं है।

और वह होता ही जा रहा है। इतनी बार जांच हुई, कि जिनसे पूछताछ होती होगी, वे भी बौखला गए होंगे। क्या पहले कहा होगा, क्या बीच में क्या बाद में, सब याददाश्त में धूमिल हो चुका होगा।

यही तो कारण है कि देश में कोई भी साधारण नागरिक कानून की सहायता नहीं करना चाहता।

क्यों चाहेगा? पहले शाह आयोग बना। फिर नानावटी आयोग। केन्द्र सरकार, चूंकि गुजरात की मोदी सरकार को संदेह से देख रही थी, इसलिए हर बार केन्द्र विरुद्ध गुजरात राज्य हो रहा था। हर केस सुप्रीम कोर्ट जा रहा था। गुजरात की समूची न्याय व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगा हुआ था। हर केस को गुजरात से बाहर भेजा जा रहा था। इसीलिए जो जांच स्पेशल इन्वेस्टीगेशन टीम से करवाई गई, वह स्वयं सुप्रीम कोर्ट ने बनाई।

और फिर कितने, कैसे विवाद हुए – इससे अखबार रंगे पड़े हैं। जिक्र करने की जरूरत नहीं है कि मनमोहन सरकार के आते ही, रेलमंत्री लालू यादव ने एक अलग ही जांच आयोग बना दिया। भारी आलोचना व निंदा के बीच, इस जस्टिस बैनर्जी आयोग ने कुछ तीन-चार महीने में ही अंतरिम रिपोर्ट पेश कर दी। जिसमें गोधरा में जिंदा जलाए जाने को 'दुर्घटना' घोषित करार दिया गया! और, 'साजिश' को झूठा करार दिया। जबकि नानावटी आयोग को इसे साजिश बताने में छह साल लगे। याद दिलाना जरूरी है कि हाईकोर्ट ने उक्त बैनर्जी रिपोर्ट को 'असंवैधानिक, अवैध और झूठा' घोषित कर शून्य करार दिया था।

इस गंदी राजनीति का स्मरण केवल यह बताने के लिए किया जा रहा है कि ऐसा भारतीय इतिहास में पहली बार हुआ कि इतने सारे साधारण नागरिकों की जान चली जाने पर भी कांग्रेस, भाजपा और अन्य दल अपनी-अपनी चालों में तल्लीन रहे। हर स्तर पर इस हत्याकांड को 'दुर्घटना' बनाने की कोशिश चलती रही।

और इसी कारण यह प्रश्न बड़े आकार में आज उभरा है कि जब हर तरह से साजिश सिद्ध हो गई – फिर फांसी से माफी क्यों? हर वो कदम जो इसे 'दुर्घटना' सिद्ध करने के लिए उठाया गया था, झूठा सिद्ध हो गया, फिर फांसी क्यों नहीं?

इसलिए कि :

– जो जिंदा जला दिए गए, उनमें से अधिकतर अयोध्या से लौट रहे कार सेवक थे।

– गोधरा कांड के ठीक अगले दिन से समूचे गुजरात में दंगे भड़क गए थे – इसलिए इसे उन दंगों का आधार माना गया।

– देशभर में विरोधाभासी प्रतिक्रिया थी। दो फाड़। वर्टिकल डिवाइड।

चूंकि गुजरात में अगले दिन भड़के दंगों ने इतनी जानें ले ली थीं कि गोधरा में मारे गए लोगों के प्रति किसी की करुणा देखने में ही नहीं आई। यह एक कड़वा सच है।

यह उतना ही कड़वा सच है, जितना यह कि फिर फैले दंगों में – विशेषकर नरोड़ा पाटिया और नरोड़ा गाम और गुलबर्ग सोसाइटी में – जिस तरह निर्मम, बर्बर हत्याएं की गईं, वैसी अराजकता तो देश ने पहले कभी देखी-सुनी ही नहीं होगी। या 1984 के सिख-विरोधी दंगों में देखी हो। तब कांग्रेस की सरकारों ने उपद्रवियों को खुली छूट दे दी थी। पुलिस पंगु बनी बैठी रही।

इसमें नरेन्द्र मोदी की गुजरात सरकार ने दंगाइयों को वैसी ही छूट दे दी। हालांकि, हर कोर्ट ने अंततः इस आरोप को खारिज कर दिया। तथापि नरोड़ा पाटिया को ही लें – तो वहां की विधायक माया कोडनानी संभवतः इतिहास की पहली महिला मंत्री या यूं कहें कि पहली निर्वाचित नेता होंगी जिन्हें दंगों का 'मास्टरमाइंड' कह कर 28 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई।

ऐसी कठोर सजा सुनाने वाली जज ज्योत्सना याग्निक (मुझसे कोई संबंध नहीं) के न्याय पर अपने विशेष सम्पादकीय में मैंने लिखा था कि जज यदि तय कर लें तो कोई अपराधी बच नहीं सकता। चाहे सरकारें कोई भी हो। कुछ भी चाहती हो।

आज जब गहरी दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं एक और कड़वा सच : कि गुजरात में इतने भयंकर दंगे करने वालों को – किसी को भी – फांसी कहां मिली?

गुलबर्ग सोसाइटी का ही उदाहरण लें। पूर्व सांसद अहसान जाफरी पर जो हमला हुआ था – और पूरी सोसाइटी में जो हिंसा और पाश्विक कृत्य हुए – हाथ काट डाले, आग लगा दी- किन्तु किसको फांसी हुई?

रेअरेस्ट ऑफ रेअर और क्या होगा? आखिर किसे माना था इस श्रेणी में?

'असंभव के विरुद्ध' लगातार इस पर विरोध में तथ्यात्मक तर्क देता रहा है। फिर भी, दोहराना प्रासंगिक होगा कि 1973 में पहली बार सीआरपीसी में जोड़ा गया कि मृत्युदंड देने पर जजों को 'विशेष कारण' बताने होंगे। 1980 में बचन सिंह बनाम स्टेट ऑफ पंजाब में सुप्रीम कोर्ट ने 'रेअरेस्ट ऑफ रेअर' का सिद्धांत लागू किया। और 4:1 जजों के बहुमत से पारित हुआ।

इसमें समाज के 'कलेक्टिव कॉन्शन्स' की बात कही गई थी। कि समाज के सामूहिक अंतःकरण को जब ऐसा लगे कि जिनके पास न्यायिक अधिकार हैं – वे अपराधी को मृत्युदंड दें – तब वह रेअरेस्ट ऑफ रेअर होगा। अर्थात् इतनी बर्बरता दिखे।

इसमें सुप्रीम कोर्ट ने यह भी बहुत अच्छा जोड़ा था कि 'भले ही ऐसा सोचते समय समाज में लोग निजी रूप से मृत्युदंड की धारणा के विरोधी हों।'

यानी बड़े, व्यापक सामाजिक पैमाने को ध्यान में रखकर ही फांसी दी जाए, न कि व्यक्तिगत विचार पर।

जानना महत्वपूर्ण होगा कि मोहम्मद अजमल कसाब, मोहम्मद अफजल और मोहम्मद याकूब मेमन तीनों को फांसी सुनाते समय कॉन्शन्स (conscience) का ही जिक्र सुप्रीम कोर्ट की तात्कालीन बेंचों ने किया। किन्तु ये तीनों उस आतंक की सीमा में स्पष्ट आते हैं जो परिभाषित है।

क्या 59 लोगों को पूरी तैयारी से, बैठकें कर, पेट्रोल खरीदकर, कंटेनर ला कर, टीम बनाकर, साजिश से जिन्दा जलाना आतंक नहीं है? कि पाकिस्तान से आए हत्यारे ही आतंकी माने जाएंगे। अगर ऐसा है तो इसमें भी 11 में से 2 हत्यारे कराची जा चुके हैं। एक हत्यारा तो हरकत-उल-जेहाद या ऐसे ही अजीबो-गरीब नाम वाले संगठन से जुड़ा आतंकी था जो बांग्लादेश भाग रहा था। पश्चिम बंगाल में गिरफ्तार किया गया।

क्या नरोड़ा पाटिया या गुलबर्ग सोसाइटी में हाथ काटना, रक्तपात करना आतंक नहीं है?

सुप्रीम कोर्ट को 'रेअरेस्ट ऑफ रेअर' की स्पष्ट मुखर (स्पीकिंग) व्याख्या करनी चाहिए।

आतंक की भी।

क्योंकि अभी ये न्याय की ही तरह अस्पष्ट हैं।

क्योंकि सुप्रीम कोर्ट में एक पिता के नाम पर कलंक एक दरिंदे का केस आया जिसमें उसने अपनी बेटी की गरिमा पर हमला किया और शोषण के बाद पत्नी द्वारा विरोध करने पर दोनों को टुकड़े-टुकड़े कर मार डाला। फिर भी इसे रेअरेस्ट न मानते हुए कोर्ट ने कहा कि अभी भी इस दोषी में सुधार की गुंजाइश है। इसके एक हफ्ते के भीतर ही एक अन्य केस में एक सात वर्षीय बच्चे की निर्मम हत्या करने वाले को रेअरेस्ट केस बताकर फांसी सुनाई। यह कहा कि चूंकि वह परिवार का इकलौता 'मेल' चाइल्ड था इसलिए उसके माता-पिता के सामने जीवन भर का अंधकार छा गया।

ऐसे सैकड़ों केस हैं। हां, फांसी सिर्फ सुनाई जाती है। वह भी अधिकतर ट्रायल कोर्ट में। आम धारणा के विपरीत ट्रायल कोर्ट सर्वाधिक विस्तृत और सर्वाधिक विश्वसनीय होते हैं क्योंकि वहां हर गवाह को बुलाना अनिवार्य है। हर सबूत को जांचना जरूरी है। और हर परिस्थिति को भांपना विवशता है। इसलिए वहां सुनाई गई फांसी बहुत सोच समझकर होती है।

हमेशा न्याय हो; असंभव है। किन्तु करना ही होगा।

क्योंकि न्याय ही प्रत्येक मनुष्य को यह विश्वास दिलाता है कि वह किसी से छोटा या कमजोर नहीं है। समान है।

पंजीयन संख्या RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पं. सं. JaipurCity/250/2015-17

# महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से देश की आजादी के लिए भारतवर्ष के नवयुवकों द्वारा अमानवीय यातनाओं का रोंगटे खड़े करने वाला विवरण

**महर्षि** दयानन्द ने केवल मूर्ति पूजा के विरूद्ध ही राष्ट्रीय अभियान नहीं चलाया अपितु देश की आजादी के लिए भारतवर्ष के नवयुवकों में शौर्य का रक्त प्रवाहित किया। प्राय: आलोचक यह कहते है कि उनकी जीवनी से यही मालूम पड़ता है कि महर्षि ने केवल मूर्ति पूजा के विरूद्ध जीवनभर शास्त्रार्थ किया। तो आर्य समाजी यह कैसे कहते है कि देश को आजाद कराने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका महर्षि दयानन्द की थी। देश को स्वतंत्र कराने में महर्षि दयानन्द की भूमिका स्पष्ट करने के लिए यह लेख दिया जा रहा है। प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा महर्षि दयानन्द के शिष्य थे। जिन्हें विश्व विख्यात रूसी लेखक मैंजीमगो की भारत का मैजनी कहते थे। महर्षि का श्यामजी कृष्ण वर्मा से पत्र व्यवहार चलता रहता था और स्वामी जी ने श्यामजी कृष्ण वर्मा को पत्र 25 दिसम्बर 1880 को भेजा था। जिसमें स्वामी जी ने निर्देश दिया था कि वे विदेशी पार्लियामेंट में जाकर इसके सदस्यों को यह बताये कि ब्रिटिश शासकों ने इस देश के निवासियों की क्या दुर्दशा कर दी है और उन पर कैसे अत्याचार हो रहे है। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इंडिया होस्ट की स्थापना की। जहाँ पर उच्च शिक्षा के लिये भारतवर्ष के नवयुवकों के लिए आवास व भोजन की व्यवस्था की थी और उन्हें देशभक्ति के लिए अपने प्राणों की आहुति के लिए प्रेरित किया जाता था तथा लोकमान्य तिलक की सिफारिश पर श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने विनायक जी को छात्रवृत्ति देकर जून 1906 में लंदन बुला लिया। यद्यपि वे कानून के अध्ययन के लिए विदेश गये थे किन्तु वहां पहुंचते ही उन्होंने भारतवर्ष के नवयुवकों को संगठित कर भारत की स्वाधीनता के लिए प्रयास शुरू कर दिये। इंडिया हाउस में भारत के देशों के विद्यार्थी इंडिया हाउस में दयानन्द के इस संदेश को हृदयगम गाया जाता था। 'अधर्मी चाये चक्रवर्ति सनात, महा बलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति व अप्रिय चरण सदा किया करे अर्थात जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों की अवनति और न्यायकारियों की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे इसकों कितना ही दारूण दुख प्राप्त होये, चाहे प्राण भी भले ही जावे परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक कभी ना होवे।' महर्षि के इस संदेश से प्रेरित होकर देश के हजारों नौजवान अपने प्राणों को हथेली पर रखकर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े और उन्हें जो अमानवीय यातनायें दी गई उसका रोमहर्षक विवरण विनायक सांवरकर ने 'मेरा आजीवन कारावास में दिया है भारत की नई पीढ़ी देश भक्तों के बलिदानों से प्रेरणा ले और शहीदों के सपनों का भारत बनाने को संकल्प ले।'

कोठरी में पहला सप्ताह

जमादार मुझे लेकर सात नम्बर की बैरक की ओर चल दिया। मार्ग में पानी से भरा एक हौद मिला। जमादार ने कहा, 'इसमें स्नान करो।' मैंने चार-पाँच दिन से स्नान नहीं किया था। समुद्र यात्रा से शरीर एकदम मलिन तथा पसीनामय हो गया था। इससे स्नान की अनुमति मिलते ही मन में अपार आनन्द हुआ। लेकिन समस्या कि किस वस्त्र को पहनकर नहाया जाय?

जमादार मेरी दुविधा को भांप गया। उसने कहा-'यह लंगोटी लो और स्नान करे। अब स्नान करते समय तथा काम करते समय इसी को पहनना होगा।' पहले तो लंगोटी पहनते हुए मन हिचकिचाया- मगर झट ही बोल उठा, ''अरे पगले, स्वामी समर्थ रामदास भी तो लंगोटी ही पहनते थे। सब जानते है कि इस कपड़े के अंदर क्या है। फिर उसे किनसे छिपाना है? इसी विचार को तो मिल्टन ने 'अवमानित मान' कहा है।यूरोप में एक धर्म गपंथ था जो कपड़े पहनना पाप मानता था। उनकी धारणा थी कि आदम और ईव दोनों प्रथम अवस्था में बिल्कुल निर्वस्त्र (नग्न) थे और थे निष्पाप। इसी से उनके अनुयायी निर्वस्त्र रहा करते थे। उनको 'अंडमाइट' कहते हैं। आज भी यूरोप में धर्म दृष्टि से न सही, मगर विज्ञान स्वास्थ्य शास्त्र की दृष्टि से कई स्थानों में स्त्री-पुरुषों के जमघट होते हैं जो सर्दी से बचने के लिए भले ही कपड़ा पहन लें किन्तु उन्हें नित्य निर्वस्त्र रहकर सूर्य प्रकाश में शरीर अनावृत्त रखना पड़ता है। कपड़ों का मोह शरीर के कई अंगों को सूर्य की किरणों से वंचित रखता है। यहाँ तक कि मृत्यु के बाद भी सूर्य-दर्शन नही होते। इसीलिए आरोग्य की दृष्टि से वहाँ के डॉक्टरों ने निर्वस्त्र रहना उपयुक्त बताया है।''

यही विचार-चक्र मन में चल रहा था कि हाथों ने अपना काम करना शुरू कर दिया। आधी चड्डी (निकर) त्यागकर मैंने लंगोटी पहन ली। अन्य राजनीतिक कैदी जब पहली बार लंगोटी पहनते तो लज्जा से गड़ जाते- यह अनुभव उस जमादार ने किया था। परन्तु मुझे न लजाते देखकर उसे घोर विस्मय हुआ। उससे उसने यही समझा होगा कि यह मनुष्य घोर निर्लज्ज है। उसकी मुद्रा यही बताती थी कि उसने मुझे मंजा हुआ बदमाश समझ लिया है।

लंगोटी पहनकर मैं कटोरीनुमा थाली से होद से स्नान के लिए पानी लेने लगा कि इतने में जमादार ने चिल्लाकर कहा, ''ऐसा नहीं करना, यह कालापानी है। पहले खड़े रहना, फिर मैं आज्ञा दूंगा लो पानी। फिर झुक कर आप पानी लेंगे- एक कटोरा भर। फिर मैं कहूँगा 'अंग मलो', तो आप अंग मलेंगे। तब फिर मैं कहूँगा और पानी लो तब आप दो कटोरे पानी लेंगे। केवल तीन कटोरे पानी में स्नान करना बस- समझे।''

उस मुसलमान पठान का यह आदेश सुनते ही मैं चौक पड़ा। नासिक क्षेत्र का निवासी होने के कारण मुझे संकल्प के अनुशासन की आदत थी। मन में हँस कर कहा- तो फिर यह भी एक संकल्प सही। वह गोरे पानी का संकल्प था, इसे काले पानी का समझ लिया जाय।

मैं स्नान करने लगा। मुँह पर पानी का छपका लगाते ही मेरे नेत्र एकदम बन्द हो गये और अंधेरा छा गया। आँखों में आग-सी लगने लगी। आखिर हुआ क्या? इतने में आदतवश चुल्लू-भर पानी मुंह में गया। मुँह कड़वा व जीभ नमकीन हो गई तथा पूरा पानी थूक दिया। साहस करके जमादार से पूछा- 'यह पानी नमकीन क्यों है?' उसने कहा- 'वाह, समुद्र का पानी भी क्या मीठा होता है? पीने के पानी का अभाव रहने से अण्डमान में स्नान, कपड़े धोने तथा अन्य उपयोग के लिए समुद्र के पानी का उपयोग करना होता है। वह भी समुद्र से नल से लाकर होद में संचित किया हुआ होता है।'

स्नान तो कर लिया पर पूरा शरीर कसमसा उठा। बाल खड़े हो गये। लगा कि स्नान नही करता तो अच्छा था। मगर फिर विचार किया कि अब इसकी आदत तो डालनी ही होगी। लन्दन तथा पेरिस के 'टर्किशी-बाथ' का आनन्द लिया है अब थोड़ा 'अण्डमानिश-बाथ' का भी अभ्यास हो जाये! राष्ट्रीय पाप का क्षालन उच्चकोटि के साबुन तथा सुगंधित तेल लगाकर गरम पानी के फव्वारों से संस्कृत संकल्प करके थोड़े ही होगा? वह होगा खारे पानी से, जमादार के 'लो पानी' के संकल्प से जो कि कठोर आज्ञा के समान है और होगा केवल तीन कटोरे भर पानी से- समझे।

कपड़े पहनकर आगे बढ़ा। सामने देखा ईंटों से बना भव्य भवन था। उसकी ऊँची-ऊँची दीवारों में लोहे की छड़ें ठुकी हुई थीं। लकड़ी का स्पर्श भी उसे अग्नि के भय से नहीं होने दिया था। सब कमरे एक समान पंक्तियों में स्थित हैं। ऐसी थी वह भवननुमा बैरक त्रितल, तिमंजिली-पत्थर ईंटों से पक्की बनी। वे चौड़ी सीढ़ियाँ, वह सफेद रंग, वह जीना तथा उन कमरों की पंक्तिबद्धता देखकर मन को अपार प्रसन्नता हुई कि मैं कोई बड़ा राजमहल देख रहा हूँ। मन ने कहा- यही तो है सात नम्बर की बैरक। इसकी तीसरी मंजिल पर मुझको रहना है। वाह! कितनी खुली हवा मिलेगी, प्रकाश आयेगा। यदि वह खुद का घर होता तो मैं कितना बड़ा धनवान कहलाता? और शायद इस भव्य भवन में और इसके इस हरे-भरे आँगन में कितने सुख से रहता? फिर यह बन्दीशाला-यह जेल- यदि इस भावना का त्याग किया जाये तो इस महल में रहना अच्छा नहीं है। ( **क्रमशः** )

।। ओ३म् ।।
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र
आर्य नीति

प्रेषक : **सत्यव्रत सामवेदी**, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/25
डाक पंजीयन संख्या
JaipurCity/250/2015-17

प्रेषित : ..............................

सत्यव्रत सामवेदी,सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक 5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित।

सम्पादक मण्डल

**चक्रकीर्ति सामवेदी, घनश्यामधर त्रिपाठी**
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951, 2621859
M :9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com
आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति, आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित
-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.